DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor,
Deptt. of Samksrit,
S.R.A.P. college, Bara,
chakia

B.A. (Hons.), Part – II
Subject – Samksrit
Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (द्वितीयोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

श्लोक सं० – 2

स्निग्धं वीक्षितमन्यतोऽपि नयने यत् प्रेरयन्त्या तया
यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दं विलासादिव ।
मा गा इत्युपरुद्धया यदपि तत्सासूयमुक्ता सखी
सर्वं तत्किल मत्परायणमहो कामः स्वतां पश्यति ॥

अन्वयः

अन्यतोऽपि नयने प्रेरयन्त्या तया यत् स्निग्धं वीक्षितम्, नितम्बयोः गुरुतया विलासादिव यत् मन्दं यातम्, मा गा इत्युपरुद्धया सखी यत्, सासूयमुक्ता तत् सर्वं मत्परायणं किल, अहो कामः स्वतां पश्यति ।

अनुवाद

उस शकुन्तला ने दूसरी तरफ नजर घुमाते हुए भी प्रेमपूर्वक जो मेरी तरफ दृष्टिपात किया, उसने अपने नितम्ब के भार से जो लीलापूर्वक मन्द-मन्द गमन किया था, और सखी प्रियंवदा के प्रति जो 'सखि मत जा, थोड़ा ठहर जा' इत्यादि वचन कहने से जो असूयापूर्वक देखा था, वे सारी बातें अपने ही ऊपर समझकर मैं मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। अहो, आश्चर्य है कि कामी पुरुष अपनी प्रिया की सारी चेष्टाएँ अपने ही ऊपर समझा करते हैं।

— 0 —

Scanned by TapScanner